E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 15-06-2023
Accepted: 29-07-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 923-925

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में समाज के विभिन्न पक्ष

डॉ. यशवीर दहिया

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, के.पी.एस. कॉलेज, रतनगढ़, चूरू, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15051696

Corresponding Author: डॉ. यशवीर दहिया

सारांश

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में समाज की विभिन्न समस्याओं, जैसे सामाजिक असमानताए जातिवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, और नारी के अधिकारों को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। उनकी रचनाओं में गरीब और अमीर के बीच की खाई, जातिगत भेदभाव, और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर होने वाले भेदभाव का गहराई से चित्रण मिलता है। वे समाज की असमानताओं और भ्रष्टाचार को प्रभावशाली ढंग से उजागर करते हैं और पाठकों को सामाजिक बदलाव की आवश्यकता का अहसास कराते हैं। इसके अलावा, उनकी लघुकथाएं नारी शक्ति और उसके संघर्षों को भी प्रमुखता देती हैं, साथ ही बुजुर्गों के प्रति समाज के उपेक्षित व्यवहार को भी सामने लाती हैं। डॉ. घोटड़ का लेखन सामाजिक चेतना और सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैए जो समाज के हाशिये पर खड़े वर्गों की आवाज बनता है और पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करता है कि क्या हम एक समान और न्यायपूर्ण समाज की ओर बढ़ रहे हैं।

मूलशब्दः सामाजिक असमानता, जातिवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, नारी अधिकार, सामाजिक भेदभाव, नारी शक्ति

प्रस्तावना

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में समाज के विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया है। वे अपने लेखन में मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक विद्रूपताओं और बदलते समय के सरोकारों को प्रमुख स्थान देते हैं। लघुकथाओं को पढने के पश्चात लगता है कि वे स्वयं इन समस्याओं का शिकार रहे हैं। लघुकथा साहित्य की वह विद्या है जो संक्षिप्त होते हुए भी गन्दी संवेदनाएँ, विचारधारा और सामाजिक सरोकार प्रस्तुत करने में सक्षम होती है। इस विद्या ने समकालीन लेखन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। उनकी लघुकथाएं केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे समाज को जागरूक करने और सोचने पर मजबूर करने काा कार्य भी करती हैं। उनकी भाषा सरल, सहज, और प्रभावशाली होती है। जो पाठकों के मन–मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ती है। उनकी लघुकथाएं न केवल समाज की वास्तविकता को दर्शाती है, बल्कि पाठकों को आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित भी करती है। उनका लेखन सामाजिक पारिवर्तन और जागरुकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उनकी लघुकथाएं उन पीडित वर्गों की आवाज बनती हैं, जो समाज की मुख्यधारा से वंचित रह जाते हैं।

सामाजिक असमानता का चित्रण

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में यह दिखाया गया है कि कैसे समाज में गरीब और अमीर के बीच खाई बनी हुई है। अमीरों की विलासिता और गरीबों की मजबूरी को वे सरल व प्रभावी शब्दों में व्यक्त करते हैं। ''अरे! मैंने तो सोचा स्वर्ण होगे। रहन–सहन से तो अच्छे लगते हैं... लेकिन आडी जात तो दलित वर्ग में आती है। फिर तो .... उनके लिए दूसरी जगह कमरा तलाशना पड़ेगा। कहते हुए रामचरण जी निकल गए थे। मोहन प्रकाश भीतर बैठा उनके बीच हुए वार्तालाप से हतप्रभ था।''[1] लेखक से लघुकथाएं आर्थिक असमानता की इस कठोर सच्चाई को पाठकों के सामने लाकर उन्हें सोचने और बदलाव के लिए प्रेरित करती है। उनकी रचनाएं केवल समस्या को दर्शाती ही नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने का कार्य भी करती है।

जातिगत व सामाजिक भेदभाव

समाज में व्याप्त जातिगत और सामाजिक भेदभाव को प्रभावी ढंग से लघुकथाओं में चित्रण किया गया है। उन्होंने अपनी लघुकथाओं में यह दिखाया गया है कि आधुनिक युग में भी जाति और समाज के विभिन्न वर्गों के आधार पर भेदभाव बना हुआ है। लघुकथाएं इस असमानता और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली सामाजिक विसंगतियों को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती हैं। समाज में अब भी कई वर्ग जाति के आधार पर भेदभाव का शिकार होते हैं। उनकी लघुकथाओं में दलितों और पिछड़े वर्गों के साथ होने वाले अन्याय, उन्हें मिलने वाले अपमानजनक व्यवहार और अवसरों से वंचित रखने की मानसिकता को दर्शाया गया है। जातिगत भेदभाव केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं

है बल्कि शहरी समाज में भी विभिन्न रूपों में विद्यमान है। "मेरा भी लड़का पढ़ता है, पर वहां स्वर्ण लोगों के साथ पढने के कारण हीनभावना से ग्रस्त हो गया है। अक्सर अपने को कोसता है। कि इस जाति में मैंने जन्म क्यों लिया? तुम अपने पिताजी से पूछकर आओ कि क्या वे मेरे लडके को गोद ले लेंगे।"[2]

आर्थिक स्थिति और समाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर होने वाला भेदभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप उभरकर आता है। उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों को सम्मान नहीं देते और उन्हें बराबर बैठने तक की अनुमति नहीं देते। यह भेदभाव केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि लोगों की मानसिकता में गहराई से समाया हुआ है। ''पास जाकर देखा तो गोपाल जी की गोद में एक बारह वर्ष का मैला – कुचौला बालक अर्धचेतन अवस्था में पड़ा है। भीड़ में से एक आवाज आ रही थी – गोपाल को जाति से बाहर करना पड़ेगा। इसने भंगी के लडके को जो मेले की तगारी ले जाते हुए पैर फिसलने से गटर में गिर पड़ा था, उठाकर अपनी गोद में ऐसे संभाल रखा है जैसे इसका ही बेटा हो। मुए को अपनी जात का डर नहीं है।"[3]

समाज में व्यापत भ्रष्टाचार का चित्रण

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में भ्रष्टाचार एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर आता है। उनकी लघुकथाएं भ्रष्टाचार की गहरी जड़ों और इसके परिणामों को दर्शाने का एक प्रभावी माध्यम है। वे अपने व्यंग्यपूर्ण और यथार्थवादी लेखन के जरिए इस समस्या की गंभीरता को उजागर करते हैं और समाज को आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी रचनाएं न केवल समाज का आइना है, बल्कि एक बेहतर भविष्य की ओर बढने का संदेश भी देती है।

''सचमुच सुबह होते–होते गांव में पुलिस की पूरी पलटन पहुंच गई और एक–एक आवाज उठाने वाले गरीब किसान को आतंकवादी करार कर पुलिस वैन में बिठा लिया गया।''[4]

आम आदमी भ्रष्टाचार के दलदल में फसकर किस प्रकार मजबूर हो जाता है। कभी उसे नौकरी पाने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है तो कभी योजनाओं का लाभ पाने के लिए अधिकारियों के आगे–पीछे चक्कर लगाने पड़ते हैं। सरकारी स्कुलों में भ्रष्टाचार किस प्रकार लोगों का जीवन प्रभावित करता है, इसे वे अपनी रचनाओं में उजागर करते हैं।

''तुम नौकरी बिल्कुल ठीक से नहीं करते। तुम्हारा कोई भी काम संतोषजनक नहीं है। इस लापरवाही और ड्यूटी में कोताही बरतने का कारण तो जान सकता हूँ? प्रत्युत्तर में सरकारी कर्मचारी ने कहा – ''सरकारी नौकरियों ऐसी ही चलती ही सर! अधिक काम करने से कौनसा गोल्ड मैडल मिल जाएगा।"[5]

सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और जनसुविधाओं में अनियमितताओं को उनकी लघुकथाएं बेनकाब करती हैं। वे प्रशासनिक उदासीनता और आम जनता की समस्याओं को बड़े सशक्त रूप में प्रस्तुत करते हैं।

नारी के प्रति सोच

वे महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और समाज में उनके प्रति होने वाले भेदभावों को रेखांकित करते हैं। उनकी रचनाओं में नारी शक्ति और उनके संघर्षों को भी प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। वे अपने लेखन के माध्यम से यह दर्शाते है कि भारतीय समाज में महिलाओं को अब भी समानता के अधिकार से वंचित रखा जाता है। बदलते समय के साथ वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। लड़कियों की शिक्षा, स्वतंत्रता और निर्णय लेने के अधिकार को सीमित किया जाता है। विवाह और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक, बुराइयों के कारण महिलाओं का शोषण होता है। लघुकथाकार ने नारी की भावनाओं का बखूबी वर्णन किया है। वह कहता है कि नारी अपनी इज्जत बचाने के लिए अपनी जान – न्यौछावर कर देती है लेकिन पुरुष समाज उसकी भूख को नहीं देखता, उसे केवल अपनी भूख दिखाई देती है। ''ऐ बाबू दस पैसे दे दो..... दो दिन से दाना भी अन्दर नहीं गया है। बाबू की नजरें फिसलती हुई उसके उभारों पर जा टिकी। चल मेरे साथ.... रात को बिस्तर भी दूंगा और रोटी भी।'' उसने उसे दुत्कार दिया। भूख से मर गई वाह! मेरा मन एक बार फिर नारी के प्रति श्रद्धा से भर उठा जो अपनी इज्जत के लिए अपनी जान भी...."[6]

गरीबी का मार्मिक चित्रण

डॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं में गरीबी एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरता है। वे अपने लेखन में समाज के उस वर्ग को स्थान देते हैं जो दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करता है, शोषण का शिकार होता है और जिसे समाज अक्सर उपेक्षित कर देता है। उनकी रचनाएं गरीबी की पीड़ा को न केवल दिखाती हैं बल्कि पाठकों को भीतर तक झकझोर देती हैं। वे अपने पात्रों के आध्यम से पाठकों को गरीबी की असल तस्वीर दिखाते हैं और एहसास कराते हैं कि एक गरीब व्यक्ति के लिए जीवन जीना कितना कठिन होता है। गरीब व्यक्ति को अपना पेट भरने के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई रचनाओं में बच्चे भूख से बिलखते दिखाई देते हैं तो कहीं कोई मजबूर होकर अपना पेट भरने के लिए अपना आत्मसम्मान तक गिरवी रखने को मजबूर हो जाता है –

''उसके चेहरे पर ढेर सारी तकलीफ उभर आई। आँखों में पानी पिनपिना आया। किसी सिसकन को अन्दर घोटते हुए बोली, ''क्या कहतो हो अम्मा? तुम कल ही गांव से आई हो। तेरी बहु और मैं वर्षों से यहां रह रहे हैं। हमने कभी ऐसा नहीं सोचा वह रूकी, फिर गहरे डूबे स्वर में बोली, ''क्या गरीब की भी कोई जात होती है अम्मा"[7] गरीब केवल भूख से नहीं मरता, बल्कि समाज द्वारा किए गए शोषण से पीडि़त होता है। लघुकथाओं में गरीब किसान, मजदूर और छोटे कामगारों की पीड़ा देखने को मिलती हैं जिन्हें रात दिन मेहनत करने के बाद भी न्याय नहीं मिलता। अमीरों और पूंजीपतियों द्वारा गरीबों के हक को छीनने और उन्हें बेवस बनाए रखने की घटनाएं उनकी लघुकथाओं में बार–पार सामने आती हैं।

प्रशासन व्यवस्था में भ्रप्राचार का चित्रण

उनकी कहानियों में सरकारी दफ्तरों की लालफीताशाही, रिश्वतखोरी, अधिकारियों की लापरवाही और आम आदमी की बेबसी को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है। सरकारी व्यवस्था किस प्रकार आम आदमी के लिए एक जटिल और भ्रष्ट तंत्र बन गई है। उनकी रचनाएं पाठकों को सोचने और इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है जिससे समाज में बदलाव की एक नई चेतना जाग सके। पुलिस आम लोगों की सुरक्षा करने की बजाए ताकतवर लोगों के इशारों पर काम करती है। अपराधियों को बचाने के लिए रिश्वत ली जाती है, जबकि लोग न्याय के लिए भटकते रहते हैं –''देखे साला, कब तक बाहर नहीं निकलता! चूहे–बिल्ली के बीच चलने वाले क्रूर खेल का मजा लेने लगे। तीसरे दिन उस तालाब की सतह पर एक फूली हुई, विकृत लाश तैरती देखी गई। शिनाखत भी हो गई– ''यह तो हरिया है, हरिया हरिजन।'' पुलिस सूत्रों ने उसकी गिरफ्तारी से स्पष्ट इंकार कर दिया– मामला आत्महत्या का मान लिया गया।''[8] न्याय और सरकारी सेवाएं केवल पैसे वालों के लिए सुलभ होती हैं, जबकि जरूरतमंद लोगों को केवल निराशा ही मिलती है।

समाज में बुजुर्गों की उपेक्षा

बुजुर्गों की उपेक्षा और उनके प्रति बदलते सामाजिक व्यवहार को प्रभावशाली तरीके से चित्रित किया गया है। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार आधुनिक समाज में बुजुर्गों को एक बोझ समझा जाने लगा है। उनकी भावनाओं की अनदेखी होती है और उन्हें अकेलेपन व तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। लेखक यह संदेश देते नजर जाते हैं कि बुजुर्ग समाज की धरोहर हैं और उनकी देखभाल व सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है। लघुकथाएं पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं और यह एहसास दिलाती है कि यदि आज हम अपने बुजुर्गों का सम्मान नहीं करेंगे तो भविष्य में हमें भी इसी उपेक्षा का सामना करना पड़ सकता है। वृद्ध माता–पिता अपने ही घर में अकेले महसूस करते हैं क्योंकि संताने उनके साथ समय बिताने की वजाए व्यस्त रहती है।

''देवेन्द्र ने कहा। अब नई पीढी के लोग जब भी अपने किए घर बनवाते हैं, उसमें पूजाघर और बुजुर्गों के लिए कमरे प्रायः अंत में ही होते हैं, मनीष ने अपना अनुभव बताया। ''तुम टीक से कहते हो – आधुनिकता के इस दौर में घर का कबाड़ घर के पीछे हो शोभा देता है। देवेन्द्र ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा! देवेन्द्र व्थी बात सुनकर सभी लोग ठहाका लगाते हुए इस दिशा की ओर बढ़े जहां लोग पीकर के थिरक रहे थे''।[9]

समाज में बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता कम हो रही है और लोग अपने स्वार्थ में इतने लिप्त हो गए है कि माता पिता की देखभाल करने का दायित्व भी नहीं निभाते।

निष्कर्ष

हॉ. रामकुमार घोटड़ की लघुकथाओं का मुख्य उद्देश्य सामाजिक चेतना और सुधार है। अगर समाज में संवेदनशीला समानता और ईमानदारी की भावना विकसित नहीं होती, तो समाज का ताना–बाना कमजोर हो जाएगा। उनकी लघुकथाएं झकझोरती है और उन्हें अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा देती है। वे हाशिये पर खड़े लोगों की आवाज बनते हैं और पाठक को सोचने को मजबूर करते है कि क्या हम वास्तव में एक न्यायसंगत और समानता पर आधारित समाज की ओर बढ़ रहे हैं।

संदर्भ

1. दलित समाज की लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 43
2. भारतीय हिन्दी लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 113
3. दलित समाज की लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 134
4. दलित समाज की लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 88–89
5. भारतीय हिन्दी लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 130
6. अपठनीय लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 38
7. दलित समाज की लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 66–67
8. दखित समाज की लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 65–66
9. भारतीय हिन्दी लघुकथाएं – डॉ. रामकुमार घोटङ, पृष्ठ – 88

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.